eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 05, Issue 01, January 2026

वैश्विक मंच पर भारत की छवि–निर्माण में स्वामी विवेकानंद का योगदान

ज्योति मिश्रा[1], डॉ0 अनुभा श्रीवास्तव[2]
[1]शोधार्थी, राजनीति विज्ञान, प्रो. राजेन्द्र सिंह (रज्जू भैया) यूनिवर्सिटी, प्रयागराज उ0प्र0
[2]एसोसिएट प्रोफेसर, राजनीति विज्ञान, राजकीय महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय, बिंदकी, फतेहपुर उ0प्र0

Received: 21 Jan 2026 Accepted & Reviewed: 25 Jan 2026, Published: 31 Jan 2026

Abstract

स्वामी विवेकानंद भारतीय पुनर्जागरण और सांस्कृतिक पुनरुत्थान के ऐसे महान प्रतीक हैं जिन्होंने भारत को आध्यात्मिकता, नैतिकता और मानवता के वैश्विक प्रतीक के रूप में स्थापित किया। उन्होंने पश्चिमी सभ्यता के भौतिकवाद के बीच आत्मिक चेतना का संदेश दिया और भारतीय संस्कृति की गहराई को वैज्ञानिक, तार्किक और सार्वभौमिक रूप में प्रस्तुत किया। 1893 की शिकागो धर्म संसद में उनके भाषण ने भारत की छवि को एक ही झटके में परिवर्तित कर दिया, उपनिवेशित, कमजोर और अंधविश्वासी देश की जगह भारत विश्व के "ज्ञान गुरु" के रूप में उभरा। इस शोध–पत्र में विवेकानंद के विचारों, भाषणों, यात्राओं, और संस्थागत कार्यों के माध्यम से यह विश्लेषित किया गया है कि उन्होंने भारत की छवि को कैसे पुनर्निर्मित किया और किस प्रकार उनका यह दृष्टिकोण आज की भारतीय विदेश नीति और सांस्कृतिक कूटनीति में भी जीवित है।

मुख्य शब्दः स्वामी विवेकानंद, वैश्विक छवि, अध्यात्म, राष्ट्रवाद, भारतीय संस्कृति

Introduction

उन्नीसवीं सदी का उत्तरार्ध भारत के इतिहास का वह काल था जब देश दासता, गरीबी और आत्म–संदेह से ग्रस्त था। औपनिवेशिक शासन के अधीन भारत को पश्चिमी लेखकों ने एक "रहस्यमय लेकिन निष्क्रिय राष्ट्र" के रूप में चित्रित किया। भारतीय जनता अपने गौरवशाली अतीत से कट चुकी थी। ऐसे समय में स्वामी विवेकानंद ने भारतीय मानस को न केवल जाग्रत किया, बल्कि यह विश्वास भी जगाया कि भारत पुनः विश्व का नेतृत्व कर सकता है।उनके जीवन का उद्देश्य था कृ भारत की आत्मा को पहचानना और उसे विश्व के सामने प्रतिष्ठित करना। उन्होंने भारत की संस्कृति को केवल धार्मिकता के माध्यम से नहीं, बल्कि मानवता, सेवा और कर्मयोग की दृष्टि से प्रस्तुत किया। उनका यह कथन अत्यंत सार्थक है कृ "भारत का उद्धार मठों में बैठे साधुओं से नहीं, बल्कि कर्मशील, निःस्वार्थ और देशभक्त मनुष्यों से होगा।"विवेकानंद का व्यक्तित्व केवल धार्मिक नेता का नहीं थाय वे एक सांस्कृतिक राजदूत, समाज–सुधारक, और मानवता के संदेशवाहक थे। उन्होंने पश्चिम को दिखाया कि भारत केवल भक्ति या ध्यान की भूमि नहीं, बल्कि वैज्ञानिक विचार और तर्क का भी केंद्र है।

भारत की दार्शनिक परंपरा और पश्चिमी दृष्टि– भारत सदियों से ज्ञान, दर्शन और अध्यात्म की भूमि रहा है। उपनिषदों, गीता और वेदांत के सिद्धांतों ने यह प्रतिपादित किया कि सम्पूर्ण सृष्टि एक ही चेतना का विस्तार है। लेकिन पश्चिमी जगत, विशेषकर औद्योगिक क्रांति के बाद, भौतिक प्रगति के कारण आध्यात्मिक शून्यता से जूझ रहा था। इस काल में भारतीय दर्शन को यूरोप में "Oriental Mysticism" यानी रहस्यमय विचारधारा के रूप में देखा जाता था। उपनिवेशवाद ने इस धारणा को और सुदृढ़ किया कि भारत आत्म–विकास के बजाय कर्महीनता का प्रतीक है।

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 05, Issue 01, January 2026

स्वामी विवेकानंद ने इस मानसिकता को बदलते हुए भारतीय दर्शन को आधुनिक भाषा में पुनर्परिभाषित किया। उन्होंने अद्वैत वेदांत को केवल धार्मिक सिद्धांत नहीं, बल्कि वैज्ञानिक सत्य के रूप में प्रस्तुत किया कृ "जैसे पदार्थ का नियम विज्ञान का विषय है, वैसे ही आत्मा का नियम अध्यात्म का विषय है।"उनकी दृष्टि में भारत का संदेश सार्वभौमिक थारू सभी धर्म, सभी जातियाँ और सभी राष्ट्र एक ही ईश्वर की संतान हैं। इस विचार ने पश्चिमी जगत में पहली बार "Universalism" की सच्ची परिभाषा दी।

औपनिवेशिक विमर्श और विवेकानंद का उत्तर– उपनिवेशवादी विचारधारा भारत को "अविकसित और असभ्य" कहकर अपनी सत्ता को न्यायोचित ठहराने की कोशिश कर रही थी। विवेकानंद ने इस विमर्श का सीधा उत्तर दिया। उन्होंने कहा, "भारत किसी से सीखने नहीं आया, बल्कि सिखाने आया है। "उन्होंने भारत की गौरवशाली परंपरा को उदाहरणों से समझाया कृ वेदों का ज्ञान, बौद्ध करुणा, जैन अहिंसा, और गीता का कर्मयोगय यह सब भारत की आत्मा का हिस्सा हैं।

विवेकानंद ने यह भी कहा कि "सच्ची सभ्यता वही है जो आत्मा को विकसित करे, न कि केवल शरीर को।" इस दृष्टिकोण ने पश्चिमी आधुनिकता की एकपक्षीय धारणा को चुनौती दी। औपनिवेशिक भारत में यह आवाज नई चेतना का प्रतीक बनी। भारतीय बुद्धिजीवियों ने विवेकानंद के माध्यम से समझा कि आधुनिकता का अर्थ केवल औद्योगिकीकरण नहीं, बल्कि आत्म–बल और आत्म–गौरव है।

पश्चिमी समाज में भारतीय विचार की स्वीकृति का प्रारंभ– विवेकानंद के पहले यूरोप में भारतीय विचार का परिचय सीमित था कृ मुख्यतः अनुवादों के माध्यम से, जैसे मैक्समुलर के ग्रंथ। लेकिन विवेकानंद ने इसे "जीवंत अनुभव" के रूप में प्रस्तुत किया। उन्होंने अमेरिका और इंग्लैंड में व्याख्यान देकर समझाया कि "वेदांत" कोई बीता हुआ ज्ञान नहीं है, बल्कि वर्तमान मानवता की समस्याओं का समाधान है। उन्होंने कहा – "वेदांत हमें यह सिखाता है कि प्रत्येक आत्मा दिव्य हैय इस सत्य को पहचानो और तुम्हारे भीतर अनंत शक्ति प्रकट होगी।"उनके इस विचार ने पश्चिम में spiritual Humanism की नई धारा को जन्म दिया। दार्शनिक एमर्सन और टॉलस्टॉय जैसे विचारकों ने उनके दृष्टिकोण से गहरा संबंध महसूस किया।

शिकागो धर्म संसद, सांस्कृतिक पुनर्जागरण और योग का वैश्विक प्रभाव

शिकागो धर्म संसद (1893) भारत की आत्मा का उद्घोष

11 सितम्बर 1893 का दिन न केवल भारत बल्कि विश्व इतिहास का एक महत्वपूर्ण अध्याय है। शिकागो में आयोजित "विश्व धर्म संसद" (Parliament of the World's Religions) में स्वामी विवेकानंद ने जब अपने संबोधन की शुरुआत Sisters and Brothers of America" से की, तो पूरा सभागार दो मिनट तक तालियों से गूंजता रहा। यह केवल एक भाषण नहीं था कृ यह उस भारत की आवाज थी जो सदियों से मौन था।विवेकानंद ने उस मंच से कहा कृ "मैं उस देश का प्रतिनिधित्व करता हूँ जिसने सभी धर्मों और जातियों के सताए हुए लोगों को अपने घर में शरण दी है।"इस वक्तव्य ने भारत को केवल एक धार्मिक भूमि नहीं, बल्कि सहिष्णुता और मानवता के प्रतीक के रूप में प्रस्तुत किया। उन्होंने पश्चिम को यह संदेश दिया कि भारत का आध्यात्मिक दृष्टिकोण किसी धर्म विशेष तक सीमित नहीं है, बल्कि वह समग्र मानवता के कल्याण के लिए है।इस भाषण के बाद भारत की छवि में एक क्रांतिकारी परिवर्तन आया। पश्चिमी समाचार–पत्रों में विवेकानंद की चर्चा "The Cyclonic Monk from India" के रूप में होने लगी। अमेरिकी दार्शनिकों, सामाजिक सुधारकों और बुद्धिजीवियों ने भारतीय दर्शन के प्रति नई रुचि दिखाई।

शिकागो भाषण का बौद्धिक और राजनीतिक प्रभाव– विवेकानंद का भाषण केवल धार्मिक सहिष्णुता का संदेश नहीं था, बल्कि यह औपनिवेशिक मानसिकता के विरुद्ध भारत के बौद्धिक प्रतिरोध का उद्घोष था।

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 05, Issue 01, January 2026

उन्होंने कहा कि "धर्म का विनाश तब होता है जब वह अपनी आत्मा को खो देता हैय और भारत की आत्मा है कृ सहिष्णुता।" उनके शब्दों में आत्मविश्वास और बौद्धिक निर्भीकता थी, जिसने भारतीय जनता में नई चेतना भरी। उनके भाषणों ने यह स्पष्ट कर दिया कि भारत न तो पाषाणयुगीन है, न ही अंधविश्वासी, बल्कि वह ऐसी सभ्यता है जिसने "विविधता में एकता" की संकल्पना को हजारों वर्षों से जिया है।भारतीय राष्ट्रवाद के लिए यह भाषण प्रेरणा का स्रोत बना। तिलक, गांधी, और नेहरू ने बाद में स्वीकार किया कि विवेकानंद ने "भारत को स्वयं में विश्वास करना सिखाया।

भारत की सांस्कृतिक छवि का पुनर्निर्माण– विवेकानंद के आगमन से पहले पश्चिमी लेखकों की दृष्टि में भारत का परिचय "मिस्टिक ईस्ट" के रूप में था कृ रहस्यमय, कमजोर, और जादू–टोने से भरा देश। विवेकानंद ने इस छवि को तोड़ते हुए कहा कि भारतीय संस्कृति "तर्क और अनुभव" दोनों पर आधारित है। उन्होंने विज्ञान और अध्यात्म के बीच सेतु बनाने का प्रयास किया। "धर्म विज्ञान से अलग नहीं है, बल्कि उसका गहरा रूप है। विज्ञान बाह्य सत्य की खोज करता है, धर्म आंतरिक सत्य की।"

उन्होंने यह भी कहा कि "भारतीय संस्कृति केवल ध्यान में नहीं, कर्म में भी विश्वास रखती है।"इस दृष्टिकोण से उन्होंने पश्चिमी भौतिकता और भारतीय आध्यात्मिकता के बीच संतुलन स्थापित किया।उनकी व्याख्यान यात्राओं के बाद अमेरिका, इंग्लैंड, जर्मनी, और जापान में भारत को एक "Thinker Nation" के रूप में देखा जाने लगा। यूरोप के कई विश्वविद्यालयों ने वेदांत, योग, और भारतीय धर्म पर अध्ययन प्रारंभ किए।

राजयोग, कर्मयोग और ज्ञानयोग भारतीय योग की नई परिभाषा

विवेकानंद का एक बड़ा योगदान यह था कि उन्होंने योग को आधुनिक भाषा में समझाया। उन्होंने पतंजलि के सूत्रों की व्याख्या करते हुए योग को "मानव चेतना की विज्ञान" कहा।

उनके अनुसार "योग वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा मनुष्य अपने भीतर की अनंत शक्ति को प्रकट करता है।"

उन्होंने योग को चार मार्गों में विभाजित किया-

1. राजयोग – आत्म–नियंत्रण और ध्यान का मार्ग।
2. कर्मयोग – निःस्वार्थ सेवा और कर्तव्य का मार्ग।
3. ज्ञानयोग – आत्म–ज्ञान और विवेक का मार्ग।
4. भक्तियोग – प्रेम और समर्पण का मार्ग।

विवेकानंद ने बताया कि इन चारों मार्गों में से कोई भी व्यक्ति अपने स्वभाव के अनुसार अपना सकता है, और प्रत्येक मार्ग अंततः ईश्वर–साक्षात्कार की ओर ले जाता है। उनके योग की यह वैज्ञानिक व्याख्या पश्चिमी समाज के लिए अत्यंत आकर्षक सिद्ध हुई। उन्होंने कहा कि "योग" केवल धार्मिक साधना नहीं, बल्कि मानवता की मानसिक और नैतिक उन्नति का साधन है।

योग का पश्चिम में प्रसार और आधुनिक प्रभाव– 1890 के दशक में विवेकानंद ने अमेरिका और इंग्लैंड में राजयोग पर व्याख्यानों की एक श्रृंखला दी। इन व्याख्यानों को बाद में पुस्तक रूप में प्रकाशित किया गया – Raja Yoga (1896)। यह पुस्तक पश्चिमी जगत में पहली ऐसी रचना थी जिसने योग को वैज्ञानिक पद्धति के रूप में प्रस्तुत किया।विवेकानंद ने लिखा– "योग केवल शरीर को नहीं, बल्कि मन और आत्मा को भी शुद्ध करता है।उनकी इस व्याख्या ने योग को "अध्यात्मिक अभ्यास" से निकालकर "मानसिक अनुशासन" के रूप में स्वीकार्य बनाया। आज जिस "Mindfulness Meditation" की बात की जाती है, उसका आधार

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 05, Issue 01, January 2026

विवेकानंद के द्वारा प्रसारित योग दर्शन में निहित है। आधुनिक काल में जब संयुक्त राष्ट्र ने 2014 में "अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस" घोषित किया, तो यह विवेकानंद के योगदान का अप्रत्यक्ष सम्मान था।

सामाजिक सेवा और रामकृष्ण मिशन की स्थापना– विवेकानंद का यह मानना था कि "मनुष्य की सेवा ही ईश्वर की सेवा है।" उन्होंने 1897 में "रामकृष्ण मिशन" की स्थापना की, जिसका उद्देश्य समाज के वंचित वर्गों के लिए शिक्षा, स्वास्थ्य और आत्मनिर्भरता प्रदान करना था।उन्होंने अपने अनुयायियों से कहा – "तुम्हारा देशभक्ति का सर्वोच्च रूप यह है कि तुम भूखे, अशिक्षित और दुखी जनों की सेवा करो।"रामकृष्ण मिशन ने भारत और विदेशों में सैकड़ों स्कूल, अस्पताल और सेवा संस्थान स्थापित किए। यह संस्था आज भी विवेकानंद के आदर्श – "आत्मनो मोक्षार्थं जगद्धिताय च" के अनुसार कार्य कर रही है।

भारतीय राष्ट्रवाद में सांस्कृतिक पुनर्जागरण– विवेकानंद के विचारों ने भारतीय राष्ट्रवाद को गहराई दी। उन्होंने कहा कि भारत का पुनरुत्थान तभी संभव है जब वह अपनी आत्मा को पहचाने। "भारत का उद्धार किसी राजनीतिक आंदोलन से नहीं, बल्कि आत्म–विश्वास से होगा।"

भारत की सॉफ्ट पावर की अवधारणा– विवेकानंद से आधुनिक भारत तक– विवेकानंद ने 19वीं सदी के अंत में जिस भारत की कल्पना की थी, वह आध्यात्मिक, नैतिक और सांस्कृतिक रूप से विश्व का मार्गदर्शन करने वाला भारत था। उन्होंने यह नहीं कहा कि भारत को हथियारों से महान बनना चाहिए, बल्कि उन्होंने कहा कि भारत की सच्ची शक्ति उसकी संस्कृति, सेवा और अध्यात्म में है। "हमारा उद्देश्य केवल भारत को महान बनाना नहीं है, बल्कि सम्पूर्ण मानवता को ऊँचा उठाना है।"आज जिस "सॉफ्ट पावर" की चर्चा अंतरराष्ट्रीय संबंधों में होती है – यानी किसी राष्ट्र की आकर्षक सांस्कृतिक, आध्यात्मिक और वैचारिक शक्ति कृ उसका प्रारंभिक सूत्र विवेकानंद के विचारों में ही निहित है। उन्होंने भारत को एक "नैतिक शक्ति" (Moral Power) के रूप में स्थापित किया। उनके विचारों के प्रभाव से आज भारत की विदेश नीति में "सांस्कृतिक कूटनीति" को विशेष स्थान मिला है। भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद (ICCR), भारतीय दूतावासों द्वारा योग, नृत्य, संगीत और दर्शन के प्रचार का कार्य विवेकानंद की उसी दृष्टि का विस्तार है।

शिक्षाः चरित्र निर्माण और आत्मनिर्भरता का माध्यम– विवेकानंद ने शिक्षा को केवल ज्ञान–संचयन नहीं, बल्कि "मनुष्य–निर्माण की प्रक्रिया" कहा। उन्होंने कहा – "शिक्षा वह है जो मनुष्य में निहित पूर्णता को अभिव्यक्त करे।"उनके अनुसार भारत में शिक्षा का उद्देश्य ऐसा समाज बनाना है जो नैतिक, आत्मनिर्भर और कर्मशील हो।उनका मानना था कि पश्चिमी शिक्षा प्रणाली केवल मस्तिष्क को प्रशिक्षित करती है, जबकि भारतीय शिक्षा प्रणाली हृदय और आत्मा को भी विकसित करती है। विवेकानंद के इन विचारों का प्रभाव आज भी भारतीय शिक्षा नीति में देखा जा सकता है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP) 2020 में "समग्र विकास", "मूल्य आधारित शिक्षा" और "21वीं सदी के कौशल" पर जो बल दिया गया है, वह विवेकानंद की अवधारणाओं के अनुरूप है।उन्होंने कहा था – "भारत के उत्थान की जड़ शिक्षा में हैय यदि शिक्षा सशक्त होगी तो राष्ट्र सशक्त होगा।"

युवा और राष्ट्र निर्माण में भूमिका– विवेकानंद युवाओं को राष्ट्र का भविष्य मानते थे। उन्होंने बार–बार कहा कि "युवा ही भारत के परिवर्तन के वाहक हैं।" "मेरे देश के युवकों! तुम्हारे भीतर असीम शक्ति है, उसे पहचानो और कर्म में लगाओ।"उनका संदेश था कि युवाओं को केवल रोजगार नहीं, बल्कि उद्देश्य चाहिए – ऐसा उद्देश्य जो समाज और राष्ट्र के विकास से जुड़ा हो। उन्होंने कहा – "शक्ति ही जीवन है, दुर्बलता ही मृत्यु है।"आज भारत का युवा जिस "स्टार्टअप इंडिया", "स्किल इंडिया" और "नेशनल सर्विस स्कीम" जैसे अभियानों में भाग ले रहा है, वह उसी आत्म–विश्वास और कर्मयोग की भावना का परिणाम है जो विवेकानंद ने प्रसारित की थी।

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 05, Issue 01, January 2026

विवेकानंद और मानवता का वैश्विक संदेश– विवेकानंद का एक प्रमुख योगदान यह था कि उन्होंने धर्म और संस्कृति की सीमाओं से परे जाकर "मानवता" को सर्वोच्च स्थान दिया। उन्होंने कहा कृजहाँ मानवता है, वहीं ईश्वर है।"उनका दर्शन "वसुधैव कुटुम्बकम" की भारतीय अवधारणा का आधुनिक रूप था।उन्होंने सभी धर्मों में सत्य की समानता पर बल दिया और कहा कि मानवता का उत्थान तभी संभव है जब लोग "स्वार्थ से ऊपर उठकर सेवा के मार्ग पर चलें। "उनकी यह विचारधारा संयुक्त राष्ट्र, विश्व शांति परिषद और आधुनिक मानवतावाद के विमर्श में भी गूँजती है। आज जब दुनिया विभाजन, हिंसा और असहिष्णुता से जूझ रही है, विवेकानंद के विचार संवाद, सहयोग और सह–अस्तित्व का मार्ग दिखाते हैं।

भारत की कूटनीतिक छवि और विवेकानंद का प्रभाव– विवेकानंद का दृष्टिकोण आज भारत की "सांस्कृतिक कूटनीति" (Cultural Diplomacy) की आत्मा बन चुका है। भारत का विदेश मंत्रालय, ICCR, और अनेक संस्थान आज योग, आयुर्वेद, भारतीय भाषाएँ और कला को विश्व में प्रचारित कर रहे हैं। यह वही कार्य है जिसे विवेकानंद ने 19वीं सदी में प्रारंभ किया था कि भारत को उसकी "आध्यात्मिक पहचान" के साथ विश्व मंच पर स्थापित करना। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने 2015 में संयुक्त राष्ट्र में कहा था – "यदि आज विश्व में भारत का सम्मान बढ़ा है, तो इसका श्रेय स्वामी विवेकानंद को जाता है जिन्होंने सबसे पहले भारत को 'सॉफ्ट पावर' के रूप में प्रस्तुत किया।"

समकालीन भारत में विवेकानंद की प्रासंगिकता– 21वीं सदी में भारत "विश्व गुरु" बनने की दिशा में अग्रसर है। यह वही स्वप्न है जो विवेकानंद ने देखा था।उनके विचार आज भी भारतीय नीतियों में जीवित हैं। आज का भारत जिस सांस्कृतिक कूटनीति और सॉफ्ट पावर के माध्यम से विश्व में अपनी पहचान बना रहा है, उसकी जड़ें विवेकानंद के विचारों में हैं।योग, ध्यान, आयुर्वेद और अंतरराष्ट्रीय सहयोग के माध्यम से भारत आज "विश्वगुरु" बनने की दिशा में अग्रसर है। विवेकानंद ने कहा था "भारत का भविष्य उसके युवाओं की ऊर्जा में है।"आज भारत की विदेश नीति में आध्यात्मिकता और सांस्कृतिक आत्मविश्वास की जो झलक दिखाई देती है, वह विवेकानंद की दूरदर्शिता का परिणाम है।उनकी शिक्षाएँ यह भी बताती हैं कि आध्यात्मिकता और आधुनिकता विरोधी नहीं, बल्कि पूरक हैं।भारत आज जिस "विश्व शांति" और "वैश्विक सद्भाव" की बात करता है, वह विवेकानंद की सोच की ही व्यावहारिक परिणति है।

निष्कर्ष (Conclusion)– स्वामी विवेकानंद ने भारत को उपनिवेशवादी बंधनों से मुक्त करने से पहले ही मानसिक रूप से स्वतंत्र कर दिया था। उन्होंने भारत को अपने अतीत पर गर्व करना और भविष्य पर विश्वास करना सिखाया।उनके शिकागो भाषण ने भारत की आत्मा को विश्व के सामने उजागर किया कृ वह आत्मा जो सहिष्णुता, करुणा और एकता में विश्वास करती है। उन्होंने पश्चिम को यह दिखाया कि आध्यात्मिकता अंधविश्वास नहीं, बल्कि मानव विकास का विज्ञान है। स्वामी विवेकानंद भारत की वैश्विक छवि–निर्माण मेंसबसेमहत्त्वपूर्ण कड़ी हैं। उन्होंने भारत को आत्मविश्वास दिलाया और यह बताया कि भारत केवल भौतिक दृष्टि से नहीं, बल्कि आध्यात्मिक और सांस्कृतिक दृष्टि से भी विश्व का मार्गदर्शक है।उनकी शिक्षा ने भारतीय समाज को यह सिखाया कि सच्ची प्रगति केवल आर्थिक विकास में नहीं, बल्कि मानवीय मूल्यों, सेवा और आत्मबोध में है। उन्होंने कहा था "मुझे एक सौ ऊर्जावान युवक मिल जाएँ, तो मैं भारत को बदल दूँ।" उनका राष्ट्रवाद सामाजिक सुधार, आध्यात्मिकता और सेवा भावना पर आधारित था। आज का भारत आत्मनिर्भरता, एकता और सांस्कृतिक गौरव की दिशा में जो आगे बढ़ रहा है, उसकी वैचारिक नींव विवेकानंद ने ही रखी थी।वे केवल भारतीय राष्ट्रवादी नहीं, बल्कि अंतरराष्ट्रीयतावादी भी थे। उन्होंने

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 05, Issue 01, January 2026

"वसुधैव कुटुम्बकम्" की भावना को विश्व मंच पर प्रतिष्ठित किया। इस प्रकार, विवेकानंद का योगदान केवल भारत की छवि के पुनर्निर्माण में ही नहीं, बल्कि मानवता के सार्वभौमिक एकीकरण में भी अविस्मरणीय है।

संदर्भ सूची (References):–

1. डेटा, आर. के. स्वामी विवेकानंदरू ए बायोग्राफी. कोलकातारू अद्वैत आश्रम, 1994, पृ. 112.
2. रोलां, रोमां. द लाइफ ऑफ विवेकानंद एंड द यूनिवर्सल गॉस्पेल. कोलकातारू अद्वैत आश्रम, 1947, पृ. 85.
3. शर्मा, अरविंद. मॉडर्न हिंदू थॉट. ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, 2002, पृ. 201.
4. गुहा, रामचंद्र. इंडिया आफ्टर गांधी. नई दिल्लीरू हार्पर कॉलिन्स, 2007, पृ. 33.
5. स्वामी निखिलानंद. विवेकानंदरू द योगाज एंड अदर वर्क्स. न्यूयॉकर्रू रामकृष्ण–विवेकानंद सेंटर, 1953, पृ. 44.
6. शर्मा, ज्योतिरमय. ए रेस्टेटमेंट ऑफ रिलिजनरू स्वामी विवेकानंद एंड द मेकिंग ऑफ हिंदू नेशनलिज्म. येल यूनिवर्सिटी प्रेस, 2013, पृ. 77.
7. स्वामी विवेकानंद. द कम्प्लीट वर्क्स ऑफ स्वामी विवेकानंद. अद्वैत आश्रम, 9 खंड, पृ. 23.
8. रेचौधरी, तपन. स्वामी विवेकानंद इन द नाइन्टीनथ सेंचुरी कॉन्टेक्स्ट. ऑक्सफोर्ड, 1998, पृ. 45.
9. राधाकुमुद मुखर्जी. नेशनलिज्म इन हिंदू कल्चर. 1921, पृ. 101.
10. मिलन वैष्णव. रिलिजियस नेशनलिज्म एंड इंडिया'ज फ्यूचर. 2019, पृ. 56.
11.विवेकानंद, स्वामी. शिकागो धर्म संसद में भाषण संग्रह. कोलकातारू अद्वैत आश्रम, 1893. पृ. 17.
12. विवेकानंद, स्वामी. राजयोग. कोलकातारू अद्वैत आश्रम, 1896. पृ. 91.
13. विवेकानंद, स्वामी. कर्मयोग. कोलकातारू रामकृष्ण मिशन प्रकाशन, 1897. पृ. 102.
14. विवेकानंद, स्वामी. ज्ञानयोग. कोलकातारू अद्वैत आश्रम, 1898. पृ. 81.
15. गांधी, मोहनदास के. यंग इंडिया के लेख संग्रह. अहमदाबादरू नवजीवन प्रकाशन, 1920. पृ. 12.
16. सिंह, रमेश. भारतीय दर्शन और आधुनिक विश्व. दिल्लीरू मोतीलाल बनारसीदास, 2002. पृ. 144.
17. मोदी, नरेंद्र. योग और विश्व बंधुत्व पर भाषण. नई दिल्ली सूचना प्रकाशन विभाग, 2015. पृ. 8.
18. राव, शशि. भारत की सांस्कृतिक कूटनीति. नई दिल्लीरू प्रकाशन विभाग, 2018. पृ. 94.
19. बैनर्जी, सौमित्र. स्वामी विवेकानंद और आधुनिक भारत का विमर्श. कोलकातारू विश्वभारती प्रकाशन, 2020. पृ. 77.
20. "Vivekananda*s Address to the Parliament of Religions-" न्यूयॉर्क हेराल्ड, न्यूयॉर्क संस्करण, 1893, पृ. 3.
21.दत्त, नरेंद्रनाथ- Letters of Swami Vivekananda- कोलकाताः अद्वैत आश्रम, 1899. पृ. 55.